1857: STRUGGLE FOR INDEPENDENCE

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध 1857 ई० की क्रांति भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण युगान्तरकारी घटना थी। भारतीय विद्वान वीर सावरकर, अशोक मेहता, डॉ० सरकार एवं दत्ता आदि ने इसे भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम और प्रथम राष्ट्रीय आंदोलन बताया है। आर०सी० मजूमदार के अनुसार "1857 का महान विस्फोट भारतीय शासन के स्वरूप और देश के भावी विकास में मौलिक परिवर्तन लाया तथा सरकार एवं प्रजा में गहरी दरार पड़ गई।"

1857 ई० का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम यद्यपि असफल समाप्त हो गया, किन्तु इसके व्यापक एवं दूरगामी प्रभाव हुए। ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत में प्रशासन की ओर इंग्लैंड की सरकार का ध्यान; इस क्रांति ने आकर्षित किया गया। ईस्ट इंडिया कंपनी के स्थान पर भारत को सीधे ताज के अधीन कर दिया गया। 1857 ई० में स्वतंत्रता संग्राम ने अंग्रेजों और भारतीयों की दूरी को और अधिक बढ़ा दिया गया। भारतीयों को विभिन्न तरीकों से प्रताड़ित किया गया तथा इनसे बदला लेने का।

अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 ई० का विद्रोह भारतीयों का प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम होना था, जो सैनिक क्रांति के माध्यम से प्रारंभ हुआ। वस्तुतः ब्रिटिश गवर्नरों की मनमानी साम्राज्यवादी नीतियों के कारण निरंतर जनआक्रोश बढ़ता ही गया, और अंत में यह क्रांति, जनक्रांति के रूप में प्रस्फुटित हुई। इस प्रकार भारतीयों में एकता व राष्ट्रीयता की भावनाएं प्रवाहित हुईं।

Dr. Umesh Kumar Rai
Dept. of History
S.B. College, Ara

B.A. (History), B.A. Part - III
History of India (1765-1950)
13-02-2024
Class - 02 (Second)

Mob: 8809947478
Email Id:
ukrai.sasaram@gmail.com